P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

शिरो-धारा

कटि-वस्ति

योग-आसन

ध्यान

नेत्र-धारा

आयुर्वेदिक चिकित्सा

फिजियोथैरेपी

COMPLETE BODY WORKSHOP

मिट्टी-चिकित्सा

एक्यूप्रेशर

सेवाधाम चिकित्सालय

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट द्वारा संचालित
57, जैन मंदिर, रिंग रोड़,
इंडियन ऑयल पेट्रोल पंम्प के पीछे,
सराय काले खाँ बस अड्डा के सामने, नई दिल्ली-110013
दूरभाष : 011-26320000, 26327911, 09999609878

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) जैन मंदिर आश्रम, सराय काले खाँ के सामने रिंग रोड़, पो. बो.-3240, नई दिल्ली-13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस-1 से मुद्रित। **संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया**

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
जून, 2009

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 9 **अंक : 6** **जून, 2009**

: मार्गदर्शन :

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: सम्पादक मंडल :

श्रीमती निर्मला पुगलिया,

: व्यवस्थापक :

श्री अरूण तिवारी

एक प्रति : 5 रुपये
वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 700 रुपये

: प्रकाशक :

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013

फोन नं. : 26315530, 26821348

Website: www.manavmandir.com
E-mail: contact@ manavmandir.com

इस अंक में

01. आर्ष वाणी - 5
02. बोध कथा - 5
03. संपादकीय - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. विचार मंथन - 14
06. गीतिका - 16
07. कहानी - 17
08. चिंतन-मनन - 18
09. अनोखी मूर्ति - 21
10. भावी का संकेत - 24
11. गजल - 26
12. स्वास्थ्य - 27
13. बोलें तारे - 29
14. समाचार दर्शन - 31

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी,
अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी
स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री धर्मपाल अंजनारानी ओसवाल, लुधियाना
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा
धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
श्री लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन,
न्यू अशोक नगर, दिल्ली
मास्टर श्री बेजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार

आर्ष-वाणी

संकल्प्यं कल्प वृक्षेण, चिन्त्यं चिन्तामणेरपि।
असंकल्प्य मसंचिन्त्यं, फलं धर्मादवाप्यते।।

-सुभाषितम्

अर्थात्- कल्पवृक्ष से कुछ पाने के लिए संकल्प करना होता है। चिन्तामणि रत्न चिन्तन करने से फलीभूत होता है। लेकिन सच्चे दिल से किए हुए शुद्ध धर्म का फल तो बिना संकल्प और बिना चिन्तन ही मिल जाता है।

बोध-कथा

मोक्ष का मार्ग

एक दिन रामकृष्ण परमहंस काली के मंदिर में बैठे हुए थे, तभी एक युवक उनके पास आया। वह बेहद उदास और तनावग्रस्त लग रहा था। उसे देखकर परमहंस बोले, 'क्या बात है बेटा, तुम इतना उदास क्यों लग रहे हो?' युवक ने कहा, 'मैं जीवन से निराश हो गया' इसलिए मैं मोक्ष की प्राप्ति के लिए संन्यास लेना चाहता हूं। आप मुझे दीक्षा दीजिए। 'युवक की बात सुनकर परमहंस मुस्कुराते हुए बोले, 'पुत्र, क्या तुम्हारे परिवार में तुम्हें छोड़कर कोई और भी है?' उनकी इस बात पर युवक उदास स्वर में बोला, 'हां, मुझे छोड़कर मेरे परिवार में मेरी वृद्धा मां है। 'युवक की बात सुनकर परमहंस बोले, 'जब अपनी मां का केवल तुम ही सहारा हो तो तुम उन्हें बुढ़ापे में अकेला छोड़कर संन्यास क्यों लेना चाहते हो? 'इस पर वह युवक बोला, 'मैं इस संसार के मोह-माया को त्यागकर मोक्ष की प्राप्ति चाहता हूं। मेरी इस जीवन में कोई रूचि नहीं है। 'परमहंस ने कहहा, 'बेटा, अपनी मां को असहाय छोडने वाले को मोक्ष की प्राप्ति कैसे हो सकती है? जब तुम्हारी मां को तुम्हारी सबसे ज्यादा जरूरत है और जिस समय तुम्हें उन की सबसे ज्यादा सेवा करनी चाहिए, उस समय तुम संन्यास लेकर अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ रहे हो। यह मोक्ष प्राप्ति का कैसा मार्ग है? मोक्ष तुम्हें संन्यास लेकर नहीं अपितु अपनी मां की भलीभांति सेवा करने से व ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यों को पूरा करके ही मिलेगी। यही मोक्ष का एक सरल उपाय है। अपनी जिम्मेदारियों से पलायन कर संन्यास लेने वाले को कदापि मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। एक गृहस्थ व्यक्ति भी यदि अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण तत्परता व ईमानदारी से निभाए तो वह भी मोक्ष का अधिकारी बन सकता है।' परमहंस की बात युवक की समझ में आ गई और वह उनके सामने नतमस्तक होकर अपनी भूल स्वीकार कर अपनी मां के पास चला गया।

सम्पादकीय

विज्ञान का चमत्कार

भौतिक जगत के अनेक चमत्कारों में रोबोट भी एक बड़ा भारी चमत्कार है। यद्यपि यह है इन्सान के दिमाग की ही उपज, फिर भी इसको वैज्ञानिक उपलब्धि अवश्य कहा जाएगा। आज तक रोबोट नाना रूपों में हमारे सामने आया है। पहले रोबोट चलता-फिरता नहीं था। सिर्फ इशारों से इन्सान की मदद करता था। फिर चलने-फिरने भी लगा। अब तो रोबोट का ऐसा मॉडल तैयार हो रहा है, वह मॉडल जापान में फैशन शो के दौरान उतेंरगी रैंप पर रोबोट मोडल। वह लड़की के रूप में सामने आएगी। इसकी खासियत यह होगी कि यह बोलती भी है, रैंप पर चलती भी है बिल्कुल जीती जागती मॉडल की तरह। और तो और दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए स्माइल भी करती है। वक्त-2 पर इसके चेहरे के भाव बदलने के लिए इसके चेहरे में कई मोटर्स फिट की गई हैं। इस रोबोट की लंबाई पांच फुट है। इसका वजन अठ्ठावन किलो है और इसके बाल बिल्कुल काले हैं। बिल्कुल जीती जागती मांडल को देखकर कौन कहेगा कि यह बेजान हैं। इसी तरह रोबोट की दुनिया में आए दिन नए-नए प्रयोग हो रहे हैं।

शुरू-2 में जब रोबोट के नमूने दिखाए गए तो लोगों को विश्वास नहीं हुआ। फिर जब रोबोट लोगों के जीवन व्यवहारों में कारगर हो गया तो सबको यकीन हो गया कि विज्ञान की दुनिया में कुछ असंभव नहीं सिर्फ एक मृत व्यक्ति को जिंदा करने के सिवाय।

विज्ञान ने और भी इन्टरनेट, इन्टरकॉम, टेलीफोन, टी.वी., ई-मेल, फेक्स, वाई-फाई, आईपोर्ट म्यूजिक प्लेयर, वीसीआर, सीडी प्लेयर, कम्पयूटर, यू.पी.एस., इनवरटर आदि का अविष्कार किया है इसी तरह वूर यातायात के साधन जैसे बिजली से चलनेवाली रेलगाड़ी, मैट्रो ट्रेन, सी.एन.जी. बस, ए.सी. बस, हवाई जहाज आदि। विज्ञान ने हर तरफ धूम मचा रखी है। अब तो विज्ञान ने कृत्रिम हृदय (Artificial Heart) भी बना लिए हैं जिससे लाखों आदमियों की जान बच सके वो भी सस्ती कीमतों पर। महज 1 लाख रूपयों में हम अपना हृदय बदल सकते हैं। यह विज्ञान की ही देन है जो नए-नए अविष्कार करते हैं और मनुष्य के जीवन को सुलभ बनाते हैं। इसी तरह सर्जरी, चिकित्सा के क्षेत्र में जो विकास' हुआ है वह बेजोड़ है। जितने सुख-सुविधा के साधन बढ़े हैं, उतना ही आपसी दुराव, खिंचाव मनोमालिन्य का वातावरण बनता जा रहा है इस भौतिक विकास के साथ-2 भावनात्मक विकास भी होता तो कितना अच्छा होता।

○ निर्मला पुगलिया

असली वीर कौन?

○ गुरुदेव की कलम से

कौन है निष्पाप

बात हजारों बर्ष पुरानी है, परन्तु वह सवाल जो इसमें उठाया गया है, आज भी हमारे सामने खड़ा है, एक विराट् प्रश्न-चिन्ह के रूप में हमारे अन्तश्चक्षुओं के सामने झूल रहा है। वह यह कि पहला पत्थर मारे पापी को- वह निष्पाप व्यक्ति कहां है? न्याय-निर्णय करे अन्यायी पर, वह पवित्रात्मा न्यायमूर्ति कहां है? भ्रष्ट समाज और उसकी व्यवस्था का विरोध करने का अधिकारी हो, वह सम्पूर्णतः अभ्रष्ट नैतिक व्यक्ति कहां है? हिंसा का प्रतिकार करने का जो अधिकारी है वह अहिंसक कहां है? अगर वह अहिंसक है तो हिंसा का भी प्रतिकार नहीं करेगा क्योंकि प्रतिकार स्वयंमेव हिंसा है। अगर वह हिंसा का प्रतिकार करता है तो अभी तक अहिंसक नहीं हो पाया है अतः प्रतिकार करने का अधिकारी बना ही नहीं। अहिंसक प्रतिकार नहीं कर सकता, फिर भी हिंसा उससे निरस्त होती है। वह जो प्रतिकार करता है, हिंसा का निरस्त नहीं कर पाता, बल्कि उसका सम्पोषण कर रहा होता है। क्योंकि प्रतिकार के पीछे उसका अहं स्वयमेव हिंसा है। प्रतिकार का अर्थ है अहं की प्रतिष्ठा, चाहे वह हिंसक के अहं पर भी क्यों न हो। अहिंसा गांधीजी के शब्दों मे अहं-शून्यता की ही चरम सीमा 'फार्देस्ट लिमिट ऑफ ह्युमिलिटी' है।

नहीं है वीरता का सम्बन्ध अहंकार से

वीरता का सम्बन्ध हम अहंकार से जोड़ते आये हैं। सत्ता अहंकार के सम्पोषण की प्रक्रिया ही है। अहंकार-शून्य व्यक्ति के लिए अपनी सत्ता जैसा कुछ रह ही नहीं जाता। उसके लिए सत्ता रही ही नहीं, न अपनी दूसरों पर और न ही दूसरों की अपने पर। साम्राज्य-विस्तार हो या धन-वैभव का फैलाव, सबके केन्द्र में खड़ा है व्यक्ति का अहं। इस अहं की अभिव्यक्ति जितनी दर्पपूर्ण होगी, जितनी दूसरों की उपेक्षा करते हुए उन्हें निर्ममता से नकारते और कुचलते हुए होगी, उतना ही हम उसे वीरत्व समझेंगें। इसी दृष्टि से इतिहास

में हमें सिकन्दर नैपोलियन और हिटलर उल्लेखनीय वीर पुरूष प्रतीत होते हैं। लेकिन यह हमारा अपना भ्रम है। अहंकारी व्यक्ति कायर है, कमजोर है। वह अपने अहंकार का दास है। उसका सारा जीवन-व्यवहार, अहंकार, मात्र की अभिव्यक्ति है। व्यवहार के स्तर पर हीनता की। जो व्यक्ति जितना हीन होगा उतना ही अपने को श्रेष्ठ दिखलाने का प्रयत्न करेगा। दूसरों के प्रति उतना ही प्रतिस्पर्धाशील होगा। अपनी सत्ता से दूसरों के प्रति उतना ही प्रतिस्पर्धाशील होगा। अपनी सत्ता से दूसरों को दबाने और कुचलने में सन्तोष अनुभव करेगा। वह बाध्यता-ग्रस्त 'आबसेस्ड' है, मनोरोगी है। महावीर हीनता से ग्रस्त नहीं हैं अतः श्रेष्ठता के दावे से भी मुक्त हैं। वे अपने को शून्य में निमज्जित कर चुके हैं। वे कुछ नहीं रहे, मात्र सत्ता हैं अस्तित्व की, अपने आपमें-प्योर बींइग इन इटसेल्फ'। न हीन हैं, न श्रेष्ठ-णो हीणे णो अइरित्ते। वे जैसी बात बड़ों से करते हैं वैसी ही छोटों से भी- जहा पुण्णस्स कत्थई तहा तुच्छस्स कत्थई। वे न अपनी आशातना करते हैं न दूसरों की-न अत्ताणं आसाएज्जा न लोयं आसाएज्जा। उन्होंने साक्षात्कार कर लिया है कि जीवन-सत्ता सबमें एक ही है। वह हाथी में भी है, कुन्थु में भी है और दोनों में वही है। गुणात्मक कसौटी पर समान महत्ता की अधिकारिणी है। स्वाइत्जर ने एक जगह लिखा है-'मैं जीवन हूं जीना चाहता हूं, मेरे चारों ओर जीवन है जो जीना चाहता है। वह जीवन जो मैं हूं और वह जो मेरे चारों ओर है अपनी मूल सत्ता में जीवन ही है अर्थात् मैं ही हूं। उसे कहीं किसी के द्वारा भी आघात पहुंचता है तो वह जीवन द्वारा ही जीवन को पहुंचता है और चूंकि मैं स्वयं ही जीवन हूं अतः वह आघात मेरे द्वारा मुझको पहुंचता है।' महावीर इस अनुभूति को बहुत गहराई से प्रतीत करते हैं और कहते हैं-पुरूष जिसे तू हन्तव्य-मारने की क्रिया का विषय-'आब्जेक्ट' समझता है वह स्वयं तू ही है। कोई किसी को भी मारता है तो वह जीवन को खण्डित करता है और चूंकि जीवन एक और अविभाज्य सत्ता है अतः वह विखण्डन स्वयं उनका भी है जो उसे कर रहा है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय से लेकर मानव तक समग्र जीवन-जगत में परिव्याप्त जीवन-सत्ता महावीर का व्यक्तित्व बोध है, मात्र शरीर और मन का एकान्तिक संकाय नहीं जिसकी संकीर्ण सीमाओं में हम जीते हैं।

अहंकार की सबसे बड़ी दीवार

हिंसा का निर्मूलन वहीं हो सकता है जहां आत्म (सेल्फ) तथा लोक (नॉन सेल्फ) के मध्य

सीमारेखाएं ही टूट जाएं। देह की दीवारों से पार जाकर आत्मसत्ता समग्र जीवन-अस्तित्व के साथ अभिन्न एकत्व में परिव्याप्त हो उठे। यहां अहंकार की सत्ता रहती ही नहीं क्योंकि अहंकार आत्मचेतना पर देह-मन से तादात्म्य का सीमाबोध मात्र है जो एक प्रतीत्याभास है, 'फिनोमिना' मात्र। यथार्थ (रियलिटी) है वह आत्मचेतना जो समग्र जीवन-सत्ता में अपनी उसी एक गुणात्मक स्थिति में है। इसी कारण जहां लौकिक जीवन में हम वीरत्व को दूसरों पर अहं की सत्ता प्रतिष्ठापित करने का साधन पाते हैं- सिकन्दर, सीजर, नेपोलियन सबमें, वहां महावीर का वीरत्व सम्पूर्ण अहं-शून्यता में से प्रस्फुटित हुआ है। वहां मैं-चेतना इतनी विराट् हो गयी है कि उसे कोई शब्द नहीं दिया जा सकता और जिसे मैं-वाची शब्द-संज्ञा हम देते आए हैं वह महावीर की भूमिका पर कोई सत्ता और अर्थवत्ता नहीं रखती।

आज हम बहुधा कहते हैं कि मानव का जीवन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उसके लिए निम्न कोटि के प्राणियों का शोषण और हनन भी हो वह अकाम्य नहीं। यह हमारे सामूहिक अहं से निष्पन्न भ्रान्ति के अलावा कुछ नहीं। एक घोड़ा यह कर सकता है कि घोड़े के जीवन की रक्षा के लिए आदमी का शोषण और हनन न्याय है। यही बात एककोषीय जीव अमीबा भी कह सकता है। मूल बात है जीवन। एक अमीबा कल का बुद्ध हो सकता है। एक कीड़ा कभी ईसामसीह हो सकता है। जीवन-सत्ता के हजारों-लाखों रूप हैं, लेकिन अपने आप में वह जीवन-सत्ता ही है। उसका कोई भी रूप दूसरे की अपेक्षा कम या अधिक महत्वपूर्ण नहीं। उसका कोई भी रूप दूसरे के लिए साधन नहीं। जीवन साध्य है, अपनी-अपनी समग्र अखण्डित एक सत्ता में वह अपना साधन भी है, लेकिन उसका कोई एक रूप दूसरे के लिए निरा साधन मात्र स्वयं के लिए साध्य नहीं बन सकता। जीवन की साध्य-साधनामयी सत्ता अपनी समग्र एकता के सन्दर्भ में ही अनूतर्भूत है, उसके बाहर नहीं। यह समत्व-दृष्टि की महावीर की अहिंसा बनी अथवा यों कहें कि व्यवहार के स्तर पर जिसे अहिंसा का जाता रहा है वह इसी समत्व-चेतना की प्रतिच्छाया मात्र है। बुद्ध ने जब व्यक्तित्व-बोध के देह-मानसिक स्तरों पर आत्मा (सेल्फ) की सत्ता स्वीकार करने से ही इनकार किया था तब वह अहिंसा की इसी परम भावभूमि पर खड़े थे। इसी को गांधी ने कहा है- अपने को एकदम शून्य कर डालना। महावीर के वीरत्व का उद्घाटन यहीं से होता है- अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त तो देह, मन की क्रियाएं, जीवन के साधन तथा परिवेश एवं विचार की अभिव्यक्ति मात्र है।

जो अन्तिम है वही है प्रथम

महावीर ने कहा- पंतं लूहं च सेवन्ति वीरा सम्मत्त दंसिणो। वीर प्रान्त (अवशिष्ट) और रूक्ष (रसहीन) का सेवन करते हैं क्योंकि वे समत्वदर्शी हैं। समत्वर्शी वही हो सकता है सब जीवों को अपने समान समझे और अपने आचरण में उस समता का अवतरण करे। वह अपने को किसी से विशिष्ट नहीं रखता। आहार-विहार में भी यह सामान्य स्तर का अतिक्रमण नहीं करता। सामाजिक-आर्थिक स्तर पर जो अन्त्यजन है, अन्तिम व्यक्ति है, सबसे अकिंचन, उसके भी वह समान है। उससे ऊपर कदापि नहीं। उसके द्वारा सेवनीय पदार्थों में से भी जो बचता है, उसके द्वारा भी जो त्यक्त हो जाता है, उसे वीर ग्रहण करता है। अन्त्यज भी जिसे ग्रहण नहीं करता, छोड़ देता है, उसे वीर ग्रहण करता है। समाज से स्तर-क्रम में जो व्यक्ति सबसे पीछे खड़ा है उससे भी पीछे जाकर खड़ा है वीर। अकिंचन का भी अकिंचन बनकर वह जीता है।

त्याग भी विकृत बन सकता है

एक व्यक्ति धन छोड़ सकता है, घर-बार छोड़ सकता है, एकदम अकिंचन हो सकता है बाहरी जीवन में भौतिक स्तरों पर, लेकिन मन में वह अपने को दूसरों से इतना विशिष्ट मान सकता है कि उनका अस्तित्व ही उसे कीडों-मकोड़ों सा लगने लगे। भौतिक जीवन की अकिंचनता अगर मानसिक-आत्मिक जीवन में अहंवादिता की पोषक बन जाती है तो वह तथाकथित त्याग भी विकृत बन जाता है। एक व्यक्ति ने बीस लाख की सम्पत्ति छोड़ दी। साधु हो गया। कुछ भी उपकरण नहीं रखता। एकदम करपात्री-हाथों की अंजलि में ही आहार-जल ग्रहण करता। भीतर बीस लाख रूपयों की सम्पत्ति के त्याग का अहंकार प्रतिपल अपना पोषण उस त्याग में से पाने लगा। बीस लाख रूपयों की कीमत पर उसने उतने ही परिमाण में अहंकार खरीद लिया। पहले वह बीस लाख रूपयों का स्वामी था। वह स्वामित्व उसके अहं को तृप्त करता था। जब उसने बीस लाख रूपये छोड़ दिए तो वह त्याग उसके अहं को तृप्त करने लगा। कुल मिलाकर हिसाब बराबर रहा। अगर उसे त्याग की स्मृति में अहंकारजनित तुष्टि मिल रही है तो यह त्याग नहीं, विनिमय है, स्वामित्व के अहंकार के बदले स्वामित्व छोड़ने के अहंकार का। यह त्याग नहीं है, विनिमय है, वस्तु छोड़ने के बदले उसके बराबर मूल्य का अहंकार लेकर।

अहंमूलक नहीं होता त्याग

वीर का त्याग अहंमूलक नहीं होता। उसमें त्याग करने का भाव नहीं होता। वह वैसा ही हो जाता है जैसे सांप की केंचुली एक स्थिति में व्यर्थ भार होकर स्वतः उतरकर गिर जाती है। जो त्याग कर रहा है वह वस्तु के मूल्य की सत्ता स्वीकार कर रहा है और उसके बदले में उतनी ही कीमत का अहंकार लेकर उसे छोड़ रहा है। लेकिन जहां वस्तु की सत्ता और महत्ता समाप्त हो जाती है, मूल्यवत्ता मिट जाती है, वहां त्याग हो जाता है। महावीर का अभिनिष्क्रमण अपने आप में न 'महा' था, न 'अभिनिष्क्रमण' ही हमारी चेतना के तल पर वह ऐसा प्रतिविम्बित होता है क्योंकि हमारी अहंमयी भूमिका उस स्तर से बहुत नीची है। महावीर ने घर नहीं छोड़ा। वे कहते हैं-''यह जीव अनन्त काल तक घर की खोज में विराट् लोक की दिशाओं-अनुदिशाओं में संचरण करता रहा है।'' घर की खोज सदा रही है लेकिन घर कहीं नहीं मिल पाया है। विराट् लोक का अणुमात्र भी प्रदेश नहीं है जहां यह जीव नहीं गया हो, लेकिन आज भी बेघर है। जिसे घर मिला ही नहीं वह घर कैसे छोड़ेगा? घर की ही वह खोज है। उस खोज में ही तो चल रहा है सारा जीव-समुदाय। जागरण का हर क्षण खोज का क्षण है। मूर्च्छा का हर क्षण खोज में गतिरोध का क्षण है आत्मविस्मृति का कारण है। महावीर जाग्रत थे। वह जागरण प्रतिपल गहरा और तीव्र, व्यापक और तीक्ष्ण हो रहा था। एक सीमा-बिन्दु आया जहां मूर्च्छा, की धूमिलता में स्वप्न-छायाएं भी अस्तित्वहीन हो गयीं। पुनः यात्रा शुरू हुई। यात्रा भीतर की थी। बाहर तो उसका प्रभाव झलक रहा था। छूटी थी मूर्च्छा, बाहर घर छूटता सा सबको लग रहा था। महावीर ने घर नहीं छोड़ा। जब तक वह घर था, छूटा ही नहीं, तो छूटने को क्या रह गया? छूटा था केवल भ्रम, छूटी थी केवल मूर्च्छा। वह भी जब तक थी छूटने का प्रश्न ही कहां उठता था? जब टूट गयी, खण्डित होकर बिखर गयी तो जागकर चल दिए वर्द्धमान। घर से बाहर नहीं, बाहर से घर की ओर यात्रा शुरू हो गयी।

जीवन शरीराधारित है। शरीर रोटी, पानी, आवास आदि की अपेक्षा करता है। हम आहार करते हैं, महावीर भी करते थे। हम कहीं रहते हैं, चलते-फिरते, सोते-बैठते, खाते-पीते हैं। महावीर भी तो कही रहते थे। उन्होंने छोड़ा क्या? 'मेरेपन' की मूर्छा ही तो छोड़ी थी। क्या वह भी उन्होंने छोड़ी थी। क्या कोई मूर्च्छा को छोड़ या पकड़ सकता है? जब

तक मूर्च्छा है, संज्ञा ही नहीं है, अतः किया भी कुछ नहीं जाता, होता ही होता है, क्रिया-प्रतिक्रिया के दुर्निवार नियमों से संचालित। जब संज्ञा है तब मूर्च्छा का अस्तित्व होता ही नहीं, टूटटी भी इसलिए है कि वह छल है, माया है। मिथ्या है जो अन्ततः टूटता ही है क्योंकि भीतर से वह नहीं कुछ-अपनी वस्तुपरक सत्ता में।

त्याग है समत्त्व में प्रतिष्ठा

हिंसा क्या है? अहंमयी चेतना ही हिंसा है और अगर त्याग में पोषण पाती है तो त्याग में भी हिंसा हो जाती है। अहिंसा है अहं-शून्यता। वह बिन्दु जहां चेतना के स्तर पर सारा वैषम्य मिट जाता है, अन्तिम जन के साथ भी समता सध जाती है, समग्र जीवन-सत्ता के साथ तादात्म्य सध जाता है, समग्र विश्व के साथ एकात्मकता हो जाती है। उस भूमिका पर समता सधती है, विषमता स्वतः टूट-टूटकर गिरने लगती हैं। महावीर की प्रकल्पना का वीर है वही समस्त विश्व से एकीकृत सम्मत्तदंसी-समत्वदर्शी, जो अपने को किसी के भी आगे खड़ा नहीं करता, किसी के भी ऊपर प्रतिष्ठित नहीं करता। वह अन्तिम आदमी के भी पीछे खड़ा होता है। पौराणिक वासुकि नाग की तरह पृथ्वी के भी तल में खड़ा होकर अपने मस्तक पर उसे धारण किए रहता है। इस त्याग में न अहंकार है, न करूणा, न श्रेष्ठता, न हीनता और न कोई अन्य भाव। यह मात्र समत्व की भूमिका है-भावातीत स्थिति। वीरत्व के प्रतिमान यहां एकदम बदल जाते हैं। पारस्परिक सन्दर्भ में वीर वह है जिसके पास सबसे अधिक ऐश्वर्य होता है। इसलिए इतिहास ने वीरत्व का दर्जा रोमन सम्राट जुलियस सीजर को दिया जो एक विराट् साम्राज्य की अकूत सम्पदा का स्वामी था। केवेलरी के शिखर पर क्रॉस पर टंगे उस कंगाल बढ़ई के पुत्र को नहीं, जिसने प्रेम और समतापूर्ण मन से अन्तिम सांस तक अपने हत्यारों के प्रति मंगल-कामना करते हुए मृत्यु वरण किया था। क्योंकि पक्षियों के लिए घोंसले हैं, लोमड़ियों के लिए मांदें हैं, लेकिन मानव-पुत्र के लिए कहीं सिर टिकाने को अपना स्थान नहीं है। सर्वथा अकिंचन वीरत्व की अभिधा का भागी नहीं हो सकता, यह लोक-जीवन का यथार्थ है। महावीर का प्रतिमान इससे एकदम उलटा है। वह जो अधिक से अधिक ले रहा है, लूट रहा है, छीन रहा है, भोग रहा है वह वीर नहीं। क्योंकि उसकी देन कम है, उसका लेन ही ज्यादा है। वीर है वह जो उपने-आपको ही दे डालता है समष्टि के लिए और उससे कम से कम लेता है। वीर वह जो एक-एक व्यक्ति को आगे बढ़ाता है लेकिन स्वयं सबके

पीछे खड़ा होता है। वीर वह नहीं है जो अपने लिए विशिष्टता प्राप्त करता है बल्कि वह है जो विशिष्टता का उन्मूलन ही कर डालता है समष्टि है समष्टि के लिए भी। वह समत्वदर्शी है, समत्वजीवी है। महावीर के वीर की सत्ता ग्रहण की नहीं, त्याग की है। अर्जन की नहीं, विसर्जन की है। वह सत्ता धन-सत्ता और राज्य-सत्ता नहीं, समत्वमयी प्रेम-सत्ता है। ईसामसीह का राज्य धन-सत्ता और राज्य-सत्ता नहीं, समत्वमयी प्रेम-सत्ता है। ईसामसीह का राज्य (किंगडम) उनके शिष्यों का भी समझ में नहीं आया। क्योंकि वह भौतिक जगत् का राजसत्तामय राज्य नहीं था। महावीर का वीरत्व भी उसी प्रकार का एक सर्वथा क्रान्तिकारी उद्भावना है। ईसामसीह के शिष्यों का विश्वास था कि वह जेरूसलम में प्रवेश करते ही सिंहासन पर बैठ जाएगा, रोमन साम्राज्य को ध्वस्त कर देगा, अपनी राजनीतिक सत्ता की घोषणा करेगा, वैभव और ऐश्वर्यमय तन्त्र स्थापित कर उसका शीर्षस्थ व्यक्ति बनेगा। लेकिन ईसा ने मस्तक झुकाए नगर में प्रवेश किया। आत्मसाधना का उपदेश दिया। उसने कहा-मेरा राज्य भीतर का है। वह सबके भीतर है। पवित्रता और प्रेम का राज्य है। उसमें जो सबसे पीछे खड़ा रहेगा वही सबसे आगे माना जाएगा। जो अकिंचन होगा वही सर्वश्रेष्ठ माना जाएगा। जो विनम्र होगा वही उसका उत्तराधिकारी पाएगा। इसी प्रकार की बात चीनी संत लाआत्जे ने की कि वास्तविक नेता वह है जो सबके पीछे खड़ा होता है, इसीलिए वह सबसे आगे पूजित होता है। महावीर के वीरत्व तथा ईसामसीह के साम्राज्य का लक्षण यही है। महावीर के चरण-चिन्हों से यह लगता था कि उक्त व्यक्ति एक चक्रवर्ती सम्राट् है, लेकिन पास आने पर देखा कि वह भिक्षुक तपस्वी है। उसे अपनी विद्या की प्रामाणिकता पर संन्देह हो गया। तव महावीर ने उन्हें बताया कि वे चक्रवर्ती हैं लेकिन धर्म-चक्रवर्ती। वे सम्राट हैं लेकिन अपने सम्राट्। वे धर्मचक्र के प्रवर्तक होनेवाले हैं। वीरत्व का यह सर्वथा मौलिक रूप था जिसकी प्रतिष्ठा ने कालान्तर में भारतीय मानस को एक नया आलोक दिया, जो आज भी अक्षुण्ण है।

औरों को वसा न सको तो उजाड़ो तो मत

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

पंचाग्नि तप से आत्मा का कल्याण करने वाले तापस को देख तेईसवें तीर्थकर पार्श्वनाथ का हृदय करूणा से भर गया। दुनिया में धर्म के नाम पर कैसा-कैसा पाखंड पल रहा है कैसा-कैसा अन्धकार फैलाया जाता है दंभी और लालची गुरूओं के जाल में फंसे लोगों को सच्चाई का दर्शन कौन कराए? इस अन्धानुशरण और अज्ञान का जब तक पर्दाफास नहीं होगा असंख्य प्राणी धर्म के नाम पर अनर्थ करते रहेंगे। पार्श्वनाथ जानते थे कि धर्म के ठेकेदारों को सचाई से मतलब नहीं है फिर भी वे जनता को उद्बोधन देना चाहते थे अतः उन्होंने लोगों से घिरे पंचाग्नि तपने वाले तापस को कहा? संन्यासी महोदय? आप जरा गहराई से बिचार करें। शरीर को तपाने से आत्मा की शुद्धि कैसे होगी। अग्नि ताप से मुक्ति मिलती तो सबसे पहले ढढेरों को मिलती जो दिन रात आग की भट्टी के सामने खड़े रहते हैं। आप अज्ञान तप से लोगों को भ्रांत न बनाएं। धर्म के नाम पर मिथ्यात्व को न फैलाएं। सूर्य की किरणों और अग्नि के ताप के साथ संन्यासी का पारा भी थोड़ा और गर्म हो गया। पार्श्वनाथ को लगा कि जड़ता इतनी गहरी है कि इस पर दूसरी तरह की चोट करनी पड़ेगी। पार्श्वनाथ ने संन्यासी से अपना ध्यान हटा कर लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा- बन्धुओं आप जिस चक्कर में हो। यह कोई धर्म का तरीका नहीं है जहां साक्षात हिंसा हो रही है। जो लक्कड़ इस अग्नि में डाले गए हैं उनमें सांप का जोड़ा झुलस रहा है। दूसरों को पीड़ा पहुंचा कर आत्मा का कल्याण कैसे किया जा सकता है? पार्श्वनाथ की बात लोगों के दिल को छू गई। लोगों ने एक साथ शोर मचाया, फाडो इस लक्कड को। हमें देखना है सच्चाई क्या है। लक्कड़ फाड़ा गया उसके अन्दर एक सांप का जोड़ा झुलस रहा था। सांप के जोड़े को देखते ही लोग संन्यासी पर टूट पडे। अरे तुम धर्म का नाम लेकर माया जाल फैला रहे हो। हमें नहीं चाहिए ऐसा धर्मगुरू, जो खुद भी डूबे और दूसरों को भी डुबाए। आप को दूर से ही नमस्कार। सिसकते

सांप के जोड़े को पार्श्वनाथ ने धर्माराधना करवाई। उस धर्माराधना के फलस्वरूप नाग और नागिन धरणेन्द्र और पद्मावती के रूप में स्वर्ग लोक में उत्पन्न हुए। इधर संन्यासी का पाखंड़ प्रकट होने से वह पार्श्वनाथ पर खार खा गया। प्रतिशोध की अग्नि में जलते तापस ने निदान पूर्वक मौत को स्वीकार किया और कमठदैत्य बनकर पार्श्वनाथ से बदला लिया। लेकिन भगवान पार्श्वनाथ ने अपने कष्टों की परवाह नहीं की। औरों के कल्याण के लिए स्वयं की तकलीफ को गौण कर दिया।

भगवान नेमिनाथ भी पशु-पक्षियों के क्रन्दन से द्रवित होकर तोरण से वापस मुड़ गए। तेल चढ़ी राजुल जैसी देव कन्या को ठुकरा दिया लेकिन अपने भोगों के लिये औरों का प्राण हरण उनसे नहीं देखा गया। निष्कारण करूणा इसी का नाम है। अपने स्वार्थ से या मतलब से किसी के प्रति करूणा शील बनना कोई करूणा नहीं है। वह तो मात्र सौदा है, स्वार्थ है प्राणी मात्र के दुःख में दुःखी और सुख में सुखी जो आत्मा है उसकी करूणा वास्तव में करूणा है जहां करूणा जीवन्त हो जाती है वहां व्यक्ति न रहकर समष्टि बन जाता है। जगत की पीड़ा उसकी अपनी पीड़ा होती है। जगत के साथ उसका ऐसा तादात्म्य हो जाता है कि अगर दूसरे व्यक्ति के कौड़े पड़ते हैं तो उसके चिन्ह उस करूणा शील व्यक्ति की पीठ पर भी देखे जा सकते हैं। ऐसी करूणा से भरे व्यक्ति पाप कर ही नहीं सकते।

धर्म की बातें सरल है, पर निभाना ही कठिन है
सरल पूजा पाठ जीवन में, रमाना ही कठिन है।।

प्राण जाए प्रण न जाए, गा रहे नित मंदिरों में
वचन खातिर राम ज्यों, वनवास जाना ही कठिन है। (1)

दौड़ते हैं देव दानव और मानव अमृत पाने
निगल विष को किन्तु शिव ज्यों मुस्कुराना ही कठिन है। (2)

सत्य पर दृढ हरिश्चन्द्र नरेंद्र की घटना सुनाते
किन्तु खुद को उस कसौटी पर चढ़ाना ही कठिन है। (3)

तोड़ने जड़ता धर्म की वीर प्रभु ने दी चुनौती
चंदना सी दमित कन्या को उठाना ही कठिन है। (4)

तर्ज-शपथ लेना... **-महासती मंजुलाश्री जी**

○ ***आचार्य रूपचन्द्र जी***

लक्ष्य है ऊंचा हमारा, हम विजय के गीत गाएं।
चीरकर कठिनाइयों को, दीप सम हम जगमगाएं।।

तेज सूरज सा लिए हम, शुभ्रता शशि सी लिए हम।
पवन सा गति वेग लेकर, चरण ये आगे बढ़ाएं।।

हम न रूकना जानते हैं, हम न झुकना जानते हैं।
हो प्रबल संकल्प इतना, आपदाएं सिर झुकाएं।।

हम अभय निर्मल निरामय, हैं अटल जैसे हिमालय।
हर कठिन जीवन घड़ी में, फूल बनकर मुस्कराएं।।

हे प्रभो नवपंथ तेरा, ''रूप'' अब होगा सबेरा।
प्राण का भी अर्घ्यदेकर, मृत्यु से अमरत्व पाएं।।

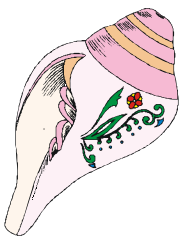

तर्ज: जो व्यथाएं प्रेरणा दें

काटना मना है फुफकार तो सकते हो

○ सरलमना साध्वी मंजुश्री

एक संत की कुटिया के बगल में एक सांप अपनी बांबी में रहता था। सांप अक्सर संत की कुटिया में आकर उनके धर्मोपदेश सुनता था। प्रतिदिन संतों का प्रवचन सुनते दुष्ट स्वाभावी-सांप का मन बदल गया। एक दिन उसने संतों से कहा-हे महात्मन्, आप सबको सद्ज्ञान देकर सबका अंधकार हरते है कृपया मुझे भी ऐसा कोई उपाय बतायें जिससे भविष्य में कभी मुझे इस योनि में न आना पड़े।

संतों ने कहा- हे सर्पराज यदि आप अपना कल्याण करना चाहते हैं तो काटना छोड़ दें! सर्प ने कहा-ठीक है भगवन्! आज से मैं किसी को भी नहीं काटूंगा। समय बीतता गया। सांप के नियम की बात सबको पता लग गई। इधर संत तीर्थ यात्रा के लिए चले गये। आसपास में ग्वालों की बस्ती थी। ग्वालों के बच्चे कुटिया पर आते-जाते थे। उन्होंने सोचा अब सांप हमें नहीं काट सकता इसलिए वे इसे तंग करने लगे। कोई उस पर पत्थर फैंकता कोई उसे चिढाता लेकिन सांप पूर्णतया शांत रहता। एक दिन एक ग्वालबाल ने सांप को पकड उसे अपनी गाय के सींगो में लपेट दिया। गाय दिन भर झाडियों में सिर पटकाती रही। बेचारा सांप लहू-लुहान हो गया। सायंकाल ग्वाले ने उसे खोलकर कुटिया के पास पटक दिया।

संयोगवश उस वक्त संत तीर्थ यात्रा से लौट आए। सांप की ऐसी हालत देखकर उन्होंने सारी बात पूछी।

सर्प ने कहा-भगवन्! आपने जब से काटने के लिए मना किया मैंने किसी को नहीं काटा। उसके परिणाम स्वरूप मेरी ये हालत हो गयी है।

संतों ने कहा-सर्पराज! हमने काटने के लिए मना किया था पर फुफकारने के लिए तो नहीं रोका था ।

श्रेय और प्रेय

○ ओशो रजनीश

दो ही तरह के लोग हैं जगत में। एक वे, जो प्रिय की खोज करते हैं। जो प्रीतिकर है, वही उनके जीवन का लक्ष्य है। लेकिन अनन्त-अनन्त काल तक प्रीतिकर की खोज की जाए, तो भी प्रीतिकर मिलता नहीं या जब मिल जाता है, तो अप्रीतिकर सिद्ध होता है। जब तक नहीं मिलता, तब तक प्रीतिकर की संभावना बनी रहती है और मिलते ही जो प्रीतिकर मालूम होता था, वह विलीन हो जाता है, तिरोहित हो जाता है। प्रीतिकर की ओर चलते हैं तो आशा बनी रहती है और पा लेते हैं, तो आशा खण्डित हो जाती है 'डिसइल्यूजनमेन्ट' के अतिरिक्त, सब भ्रमों के टूट जाने के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं लगता।

प्रेयार्थी इन्द्रियों की मान कर चलता है जो इन्द्रियों को प्रीतिकर है उसे खोजने निकल पड़ता है।

श्रेयार्थी की खोज बिलकुल अलग है। वह यह नहीं कहता कि 'जो प्रीतिकर है उसे खोजूंगा।' वह कहता है, 'जो श्रेयस्कर है, जो ठीक है, जो सत्य है, जो शिव है उसे खोजूंगा चाहे वह अप्रीतिकर ही क्यों न आज मालूम पड़े।'

यह बड़े मजे की बात है और जीवन की गहनतम पहेलियों में से एक कि जो प्रीतिकर को खोजने निकलता है, व अप्रीतिकर को उपलब्ध होता है। जो सुख को खोजने निकलता है, वह दुख में उतर जाता है। जो स्वर्ग की आकांक्षा रखता है, वह नर्क का द्वार खोल देता है। यह हमारा निरन्तर सभी का अनुभव है दूसरी घटना ही अनिवार्यरूपेण घटती है।

श्रेयार्थी हम उसे कहते हैं जो प्रीतिकर को खोजने नहीं निकलता, जो यह सोचता ही नहीं कि प्रीतिकर है या अप्रीतिकर है, सुखद है या दुखद है वह उसे खोजने निकलता है, जो सत्य है।

श्रेयार्थी की खोज पहले अप्रीतिकर होती है, श्रेयार्थी के पहले कदम दुख में पड़ते हैं उन्हीं का नाम तप है।

तप का अर्थ है-श्रेय की खोज में जो प्रथम ही दुख का मिलन होता है। होगा ही। क्योंकि इन्द्रियां इनकार करेंगी। इन्द्रियां कहेंगी कि यह प्रीतिकर नहीं है छोड़ो इसे। अगर फिर भी आपने श्रेयस्कर को पकड़ना चाहा, तो इन्द्रियां दुख उत्पन्न करेंगी। वे कहेंगी कि 'यह दुखद है छोड़ो इसे सुखद कहीं और है।'

इन्द्रियों के द्वारा खड़ा किया गया उत्पाद ही तप बन जाता है।

तप का अर्थ है कि इन्द्रियां अपने मार्ग से नहीं हटना चाहतीं और अगर आप किसी नये मार्ग को खोजते हैं, जो इन्द्रियों के लिए प्रीतिकर नहीं है, तो इन्द्रियां बगावत करेंगी। वह बगावत दुख है। इसलिए श्रेय की खोज में पहले दुख मिलेगा, लेकिन जैसे-जैसे खोज बढ़ती है, दुख क्षीण होता चला जाता है।

दुख क्षीण होता है इसका अर्थ है कि इन्द्रियां धीरे-धीरे....धीरे-धीरे नये मार्ग पर चेतना का अनुगमन करने लगती हैं और जिस दिन इन्द्रियां चेतना का पूरा अनुगमन करने लगती हैं, उसी दिन सुख का अनुभव होता है।

श्रेयार्थी की खोज में पहले दुख है और पीछे आनन्द है प्रेयार्थी की खोज में पहले सुख का आभास है और पीछे दुख है। इन्द्रियों का मान कर जो चलता है वह पहले सुख पाता हुआ मालूम पड़ता है, पीछे दुख में उतर जाता है इन्द्रियों की मालकियत करके जो चलता है उसे पहले दुख मालूम पड़ता है, पीछे दुख आनन्द में बदल जाता है।

श्रेयार्थी का अर्थ है : जिसने जीवन के इस रहस्य को समझ लिया कि जो खोजो वह नहीं मिलता, जिसे खोजने निकलो वह हाथ से खो जाता है, जिसे पकड़ना चाहो वह छूट जाता है अगर सुख खोजते हो तो सुख नहीं मिलेगा, इतना निश्चित है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति दुख के लिए राजी हो जाये, और दुख के लिए स्वयं को तत्पर करे ले और दुख के प्रति वह जो सहज विरोध मन का उसे छोड़ दे, तो सुख मिल जाता है।

ऐसा क्यों होता होगा? ऐसा होने का कारण क्या होगा? होना तो यही चाहिये नियमानुसार कि हम जो खोजें, व मिल जाये होना तो यही चाहिये कि जो हम न खोजें, वह न मिले।

ऐसा क्यों है? इसे थोड़ा हम समझ लें।

इन्द्रियां अपना रस रखती हैं। आंख सुख पाती है कुछ देखने में। अगर रूप दिखाई पड़े, तो आंख आनन्दित होती है। लेकिन, अगर वही रूप निरन्तर दिखाई पड़ने लगे, तो आनन्द क्रमशः खोता चला जाता है क्योंकि जो चीज निरन्तर उपलब्ध होती है वह देखने योग्य नहीं रह जाती। दर्शनीय तो वही है जो कभी-कभी (आकस्मिक, मुश्किल से) दिखाई पड़ता हो।

आप जाते हैं कश्मीर, तो डल झील आपको सुखद मालूम पड़ती है, लेकिन वह जो आप जी नौका खे रहा है उसे डल झील दिखाई ही नहीं पड़ती और कई बार उसे हैरानी भी होती है कि लोग कैसे पागल हैं जो इतनी दूर-दूर से इस डल झील को देखने आते हैं!

इन्द्रियां नवीन आघात से सुख पाती है। आघात, जब सुनिश्चित पुराना पड़ जाता है,

जो उबानेवाला हो जाता है। आज जो भोजन आप ने किया है, वह सुखद है कल भी वही, परसों भी वही, तो दुखद हो जायेगा।

इन्द्रियों के सभी सुख दुख बन जाते हैं। किसी से आपका प्रेम हो तो लगता है कि चौबीस घण्टे उसके पास बैठे रहें। भूल कर भी मत बैठना क्योंकि चौबीस घण्टे उसके पास बैठे रहे तो, आज नहीं कल यह उबानेवाला हो जाने वाला है और आज नहीं कल ऐसा होगा कि कैसे छुटकारा हो? इन्द्रियां जो कहती थीं, पास बैठे रहो, वहीं इन्द्रियां कहेंगी, 'भाग जाओ, दूर निकल जाओ।'

जो पुराना पड़ जाता है, इन्द्रियों का उसमें रस खो जाता है। पुराने के साथ ऊब पैदा हो जाती है। इसलिए इन्द्रियां आज जिसे प्रीतिकर कहती हैं, कल उसी को अप्रीतिकर कहने लगती हैं।

इन्द्रियों की तलाश में प्रीति से प्रारम्भ होता है और अप्रीति पर अन्त होता है। यह प्रेयार्थी का स्वभाव हुआ। इससे ठीक विपरीत स्थिति श्रेयार्थी की है। श्रेयार्थी जो परिवर्तनशील है उसकी खोज नहीं करता जो नया है उसकी खोज नहीं करता श्रेयार्थी तो उसकी खोज कर रहा है जो शाश्वत है, जो सदा है।

प्रयार्थी नये की खोज कर रहा है-नया 'सेनसेशन'। नई संवेदना, नया सुख। श्रेयार्थी खोज कर रहा है न नये की, न पुराने की क्योंकि श्रेयार्थी जानता है। कि जो नया है क्षण भर बाद पुराना हो जायेगा। जो भी नया है, वह पुराना होगा ही। जिसको हम आज पुराना कह रहे हैं, कल वह भी नया था। सब नया पुराना हो जाता है। नये में सुख था, पुराने में दुख में दुख हो जाता है। नये के कारण सुख था, तो पुराने कारण दुख हो जाता है।

श्रेयार्थी उसकी खोज कर रहा है जो सदा है, शाश्वत है, नित्य है वह नया और पुराना नहीं है बस है। इन्द्रियां उसकी तलाश में कोई रस नहीं लेतीं। इन्द्रियों को नए का सुख है। इसलिए जब कोई श्रेय की खोज में निकलता है तो इन्द्रियां मार्ग में बाधा बन जाती हैं। वे कहती है, 'कहां व्यर्थ की खोज पर जा रहे हो! सुख वहां नहीं है, सुख नये में है।'

श्रेयार्थी इन्द्रियों की इस आवाज पर ध्यान नहीं देता, वह खोज में लगा रहता है। जो सत्य है उसके प्रारम्भ में दुख मालूम पड़ता है। धीरे-धीरे इन्द्रियां बगावत छोड़ देती हैं। जिस दिन इन्द्रियों की बगावत छूट जाती है, उसी दिन शाश्वत से सम्बन्ध जुड़ना शुरू हो जाता है। इन्द्रियां जिस दिन बीच से हट जाती हैं, उसी दिन 'जो सदा है' उससे हमारा पहला सम्बन्ध होता है। वह सम्बन्ध, बुद्ध ने कहा है, 'सदा ही सुखदायी है'। महा-सुखदाई है क्योंकि वह कभी पुराना नहीं पड़ता क्योंकि वह कभी नया नहीं था। वह सनातन है।,

अनोखी मूर्ति

○ साध्वी वसुमती

बहुत पुरानी बात है, चित्रानगर राज्य में महादेव नाम का राजा राज करता था। ऐश्वर्य के सभी साधन उसे उपलब्ध थे। उसके पास सभी कुछ था। नहीं था तो उसके पास सदाचार नहीं था। दया नहीं थी। वह अपनी उद्दण्डता के लिए बदनाम था।

उसके राज्य में बहू-बेटियों की आबरू सुरक्षित नहीं थी। उसे जो बस्तु अच्छी लगती, उसे वह जबरदस्ती छीन लेता। चाहे कोई लड़की क्यों न हो। चित्रानगर की प्रजा उससे बहुत दुखी थी। सब मन ही मन उसको कोसते रहते। इसके अलावा महादेव राजा हर समय राग रंग में डूबा रहता था।

चित्रानगर की प्रजा उससे बहुत दुखी थी। सब मन ही मन उसको कोसते रहते। एक दिन जब वह रथ में बैठकर अपने राज्य में भ्रमण कर रहा था, तो एक स्थान पर सारथी ने रथ को रोक दिया। इस पर महादेव ने आश्चर्य से सारथी की ओर देखा। क्या बात है सारथी तुमने रथ क्यों रोक दिया? सारथी बोला महाराज आज मैं आपको एक बहुत ही अनोखी मूर्ति के दर्शन करवाना चाहता हूं इसीलिए रथ को रोका है। महादेव बोला कहां है वह अनोखी मूर्ति? उस मूर्ति की क्या विशेषता है? वह मूर्ति किसके पास है?

महाराज! वह मूर्ति भगवान विष्णु की है। वैसे तो वह मूर्ति पत्थर की है, पर हर माह पश्चात् वह अपना रूप बदलती रहती है। महाराज! कभी तो वह मूर्ति सोने की बन जाती है, कभी चांदी की। कभी तांबे की बन जाती है। तो कभी पीतल की। इसके साथ-साथ उस मूर्ति से हर समय सुगंध फूटती रहती है।

ओह! वास्तव में यहां सुगंध फैल रही है। वह मूर्ति अद्भुत है। जल्दी से बताओ कहां है वह मूर्ति? महाराज उस भवन के स्वामी रामलखन के पास है वह मूर्ति। जाओ, उस भवन के स्वामी पण्डित रामलखन को बुलाकर लाओ सारथी बोला जो आज्ञा महाराज! जब सारथी ने भवन में जाकर पण्डित रामलखन को राजा महादेव का आदेश सुनाया तो वह चौंका ओर सोचा राजा महादेव मेरे घर के बाहर खड़े मुझे बुला रहे हैं? क्या कारण हो सकता है? इस जालिम राजा को भला मुझसे क्या काम हो सकता है? वह उसी समय सारथी के कहने में भवन से बाहर आया- प्रणाम महाराज! आप बाहर क्यों खड़े हैं? आइए सेवक की कुटिया पर पधारिए। राजा से पारूण होकर इस प्रकार की चिकनी-चुपड़ी बातें न करो हमने तुम्हें एक विशेष प्रयोजन से बुलाया है। पण्डित आज्ञा दीजिए महाराज! हमें पता चला है कि तुम्हारे यहां विष्णु भगवान की विचित्र मूत्रि है। हमें वह मूर्ति चाहिए रामलखन सोचने लगा इस

नास्तिक राजा को उस मूर्ति के बारे में कैसे पता चला? मैं किसी भी हालत में राजा महादेव को वह मूर्ति नहीं दूंगा महाराज! आपको गलत सूचना मिली है मेरे पास ऐसी कोई मूर्ति नहीं है।

रामलखन तुम्हारी यह हिम्मत कि हमारी बात को गलत कह सको। क्षमा करें महाराज मैंने वही कहा है जो सही है। मेरे पास विष्णु भगवान की कोई मूर्ति नहीं है। पंडित की बात को काटते हुए सारथि बोला महाराज! पण्ड़ित रामलखन बहुत घाघ आदमी है। यह मूर्ति के बारे में ऐसे नहीं बताएगा। आप पण्डित के सेवक धन्नु को बुलवाइए। वह रामलखन के झूठ की पोल खोल देगा।

महादेव ने तुरन्त एक सैनिक को आदेश दिया-जाओ रामलखन के सेवक धन्नू को पकड़कर लाओ। सेवक गया और कुछ देर बाद ही पण्डित रामलखन का सेवक धन्नू राजा महादेव के सामने थर-थर कांप रहा था सारथि ने पूछा क्यों रे धन्नू कुछ दिन पहले तू मुझे नर्तकी रम्भा के यहां नृत्य देखता हुआ मिला था या नहीं? सच-सच बता सेवक सारथि जी आप ठीक कह रहे हैं।

तब तूने मुझे बताया था कि पण्डित रामलखन के पास विष्णु भगवान की ऐसी विचित्र मूर्ति है हर माह अपनी धातु भी बदलती रहती है। बोल तूने मुझे यह बताया था या नहीं वह दुविधा में पड़ गया। ओह अब क्या होगा? सच बोलता हूं तो अपने मालिक रामलखन का बुरा बनता हूं अगर झूठ बोलता हूं तो मेरा जीवन खतरे में पड़ता है। फिर कुछ देर सोच-समझकर उसने सारथि से कहा- सारथि जी आपका कहना उचित है। मैंने ही आपको विष्णु भगवान की विचित्र मूर्ति के बारे में बताया था। पण्डित जी ने सुना तो मन ही मन में बोला तो इस विश्वासघाती धन्नू ने ही सारथि को विष्णु भगवान की मूर्ति के बारे में बताया है? लेकिन चाहे कुछ भी हो जाए में उस मूर्ति को राजा महादेव को नहीं दूंगा।

देखा महाराज, पण्डित रामलखन आपसे कितना सफेद झूठ बोल रहा है? सुनकर महादेव के तन-बदन में आग लग गई रामलखन हमसे झूठ बोलने का परिणाम जानते हो? जी महाराज! तो कान खोलकर सुन लो, तुम्हारी और तुम्हारे परिवार की सुरक्षा इसी में है। कि तुम हमें जल्दी से वह मूर्ति लाकर दे दो। अन्यथा हम तुम्हें व तुम्हारे परिवार को कोल्हू में पिलवा देंगे।

जी महाराज! अभी वह मूर्ति लेकर आता हूं। महादेव के पास से पण्डित रामलखन अपने भवन में पहुंचा तो उसकी पत्नी कौशल्या ने कहा क्या बात है स्वामी? आपका मुख क्यों उतरा हुआ है? कुछ मत पूछो कौशल्या, आज सरे बाजार में राजा महादेव ने मेरा अपमान किया है... वह हमारी विष्णु की मूर्ति को लेना चाहता है। लेकिन मैं किसी भी तरह वह मूर्ति दुराचारी महादेव को नहीं दूंगा। तब तो महादेव हम लोगों को जीवित नहीं छोडेगा

स्वामी! तो क्या तुम मरने से डरती हो कौशल्या? नहीं स्वामी, ऐसी कोई बात नहीं है मरना तो जीवन में एक बार है ही, फिर भला मृत्यु से कैसा भय? तो जाओ, इससे पहलें कि राजा महादेव के सैनिक हमें मौत के घाट उतारें, हम स्वयं आत्म घात कर लें तब राम लखन विष्णु भगवाग की मूर्ति को हाथ में उठाकर बोला भगवान! मेरे अलावा इस संसार में जो आपका परम भक्त हो, आप इसी समय उस भक्त के पास चले जाइए, ताकि क्रूर राजा महादेव आप पर अपना अधिकार न कर सके।

मूर्ति ने अपना चमत्कार दिखाया। न तो मूर्ति कहीं गई और न पंडित और पंडित के परिवार को आत्मघात करने दिया। प्रत्युत राजा महादेव को ही सही मार्ग पर ले आई। और उसे अपने अन्याय का मान हो गया।

कई बीमारियों की अचूक दवा है नींबू

- जीभ पर छाले हो जाने पर नीबू के रस में रसौंत पीसकर जीभ पर लगाएं।
- नींबू को काटकर सेंधा नमक लगाकर चूसने से बवासीर में लाभ होता है।
- जायफल को नींबू के रस में घिसकर चाटने से अजीर्ण में लाभ होता है।
- कान में नींबू के पत्तों का रस लगाने से पसीने की दुर्गन्ध दूर होती है।
- एक नींबू के रस में दुगुना पानी मिलाकर खाली पेट पीने से रक्त विकार दूर होता है।
- नींबू, नारंगी और अंगूर का रस समभाग मिलाकर दिन में तीन बार 1-1 चम्मच रस पिलाने से बच्चों का सूखा रोग दूर होता है।
- नींबू का रस, गुलाबजल व ग्लिसरीन समभाग मिलाकर प्रतिदिन चेहरे पर लगाने से कील, मुंहासे व झाइयां दूर होती हैं।
- बच्चों की हंसली उतर जाने पर नींबू के पत्तों की धूनी लगाने से हंसली सही जगह पर आ जाती हैं।
- नींबू के रस में सेंधा नमक मिलाकर पीने से पथरी में लाभ होता है।
- नींबू का रस 25 ग्राम चिरायते का रस 25 ग्राम मिलाकर पीने से मौसमी बुखार ठीक हो जाता है।
- नींबू के रस में हरताल व गंधक समभाग मिलाकर घोंटकर खाजपर लगाने से खाज शीघ्र ठीक होता है।
- नींबू के रस में अफीम मिलाकर लगाने से सिर की गंज, बाल झड़ना व फुंसियों आदि में लाभ होता है।

प्रस्तुति : राजेन्द्र मेहरा

भावी का संकेत

○ साध्वी कनकलता

जीवन में शुभ अशुभ घटना घटने वाली होती है तो उसकी सूचना पहले ही मिल जाती है। किसी भी औरत की दांई आंख का फड़फड़ाना, दिल का धड़कना, मन का उदास होना ये सब अपशकुन हैं। यानी घर में कोई न कोई अनिष्ट घटना घटने वाली है ये सब इस बात को सूचित करते हैं। सुजाता का एक जीवन प्रसंग इसी का सबूत है।

किरीट के पापा! आज मेरा दिल किसी अनिष्ट की आशंका से धड़क रहा है। क्या होने वाला है?

सुजाता! तुम्हारा दिमाग बड़ा वहमी है। शान्ति से जीना सीखो।

किरीट बेटे कहां चले?

मम्मी में मेला देखने जा रहा हूं तुम चिन्ता मत करना।

किरीट को गए दस मिनट भी नहीं हुए होंगे कि उसके घर के आगे एक गाड़ी आकर रूकी। और उसमें से निकल कर एक व्यक्ति ने उसके पिता से कहा-'आप जल्दी चलिए किरीट का एक्सीडेन्ट हो गया है। वह हांस्पीटल में है।

सेठ बलभद्र ने अपनी पत्नी सुजाता को पुकारा-'किरीट की मम्मी! किरीट का एक्सीडेन्ट हो गया है, मैं जा रहा हूं।'

किरीट की मम्मी खूब चीखी-चिल्लीई, और उसने भी साथ चलने की जिद्द की, लेकिन कार वालों ने एक नहीं सुनी। कार सेठ बलभद्र को लेकर रवाना हो गई। बेचारी सुजाता के पैरों तले से जमीन ही खिसक गई। हाय राम! मेरा बेटा सही सलामत घर लौट आए। वह टूटा-फूटा भी होगा तो भी मैं उसके सहारे जी लूंगी। लेकिन मेरा बेटा भगवान को प्यारा न हो। अभी मैं इष्ट आराध्य का स्मरण करती हूं। क्या वे मेरी प्रार्थना को ठुकराएंगे? नहीं-नहीं वे अवश्य मेरे लाडले को ठीक कर देंगे।

इतने में किरीट का दोस्त शलभ रोता-चीखता आया। वह किरीट की मम्मी के आगे गश खाकर गिर पड़ा। सेठ बलभद्र भी अपनी पत्नी को पुकारते हुए आए-'किरीट की मम्मी! हम तो लुट गए। कुछ कहने-सुनने की बात नहीं है।

अरे किरीट के पापा! आप क्या कह रहे हैं? हाय राम! क्या मेरा लाडला प्रभु ने छीन लिया? नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता। मेरा किरीट जैसा भी है मेरे सामने लाकर रख दो। मैं उसमें सांस भर दूंगी। आप लोग उसको कहीं मत ले जाओ। मेरे बेटे को मेरे पास लाओ। मेरा प्रभु मुझे धोखा नहीं दे सकता।

सुजाता चीखती रही। पोस्ट-मार्टम होने के बाद किरीट के शव को लोग दाह संस्कार के लिए श्मशान घाट ले गए। सेठ बलभद्र चिता को आग लगाते समय बेकाबू हो गए-'बेटा

यह तो मैंने कभी भी सोचा नहीं था कि तेरी चिता को मैं फूंकुंगा। हर बेटा अपने बाप की चिता को आग लगाता है। उस बाप को धन्य माना जाता है जिसको उसका बेटा फूंक आए। यहां तो सारा काम ही उल्टा हो रहा है।'

इधर घर में कुहराम मचा हुआ था। औरतों के मुंह से एक ही आवाज निकल रही थी- 'हे प्रभु इतने निष्ठुर क्यों हो गए। बेचारी सुजाता की मांगी हुई भीख को भी छीन लिया। अपना बेटा होता तब भी एक बात थी। अपना घर आबाद करने के लिए, अपनी वंश परम्परा चलाने के लिए। यह तो दो महीने का बच्चा मांग कर लाई थी। भक्तों की परीक्षा लेने के तो और भी कई तरीके हैं। प्रभु तुम्हें यह क्या सूझी। बहन सुजाता इस वज्राघात को किसी तरह सहन तो कर लेगी, फिर भी अब उसका आगे का सारा भविष्य धुंधला हो गया।

सुजाता बात-बात पर एक ही बात दोहराती है-'हे भगवान इस करोड़ो की सम्पत्ति का मालिक कौन होगा? उस बच्चे ने इस घर में आकर क्या सुख भोगा? वह तो सब कुछ अछूता छोड़ गया। क्या दुनिया के सभी सुखों के साथ दुःखों का सिलसिला जुड़ा है? क्या कोई भी सुख-दुःख से अछूता नहीं है? मैं कितनी मस्त थी। मैंने जाना भी नहीं कि दुःख और चिन्ता क्या होती है। अशान्ति और बेचैनी का जीवन क्योंकर शुरू होता है। मैं तो उल्टा औरों को समझाया करती थी कि जीवन में व्यक्ति को खुशी और आनन्द से रहना चाहिए। क्या मनुष्य का जीवन घुटन और कुण्ठा के लिए ही होता है? सृष्टि के सुख-दुःख भरे नियमों के साथ समझौता करना ही जीवन की सबसे बड़ी सफलता और सार्थकता है। अब मुझे कोई बताए कि ऐसी दुर्दम घटना के साथ कैसे समझौता करूं? कैसे सामंजस्य बिठाऊं।

सेठ बलभद्र के छोटे भाई सुदर्शन ने भावना से खोई भाभी को झकझोरते हुए कहा-'भाभी छोड़ो अब दान और पुण्य। छोड़ो अब सत्संग और पूजा-पाठ। समय पर कुछ भी काम नहीं आया? धर्म, पुण्य, सत्संग सब बेकार गए। अगर आपके धर्म में कुछ भी बल होता तो क्या हम लोग अपने लाडले को खो देते?'

सुदर्शन भैया! आइन्दा तुम मुझसे ऐसी बात मत कहना। हां हमारे नसीब अच्छे नहीं हैं। किसी पिछले जन्म का पाप है यह, जो हमें अब भोगना पड़ रहा है। लेकिन धर्म-कर्म, प्रभु और सन्तों में कुछ भी नहीं है यह हम कैसे कह सकते हैं? मैं अपने कर्मों का फल भोगते हुए अपने प्रभु को दोषी नहीं ठहरा सकती। यह मेरी मोहान्धता ही है जो सब कुछ जानते हुए भी मैं माया-ममता से ऊपर नहीं उठ पा रही हूं इतना कहकर वह फिर जोर-जोर से विलाप करने लगी। प्रभो भक्तों की लाज आपको रखनी होगी। मेरा सत्संग, कीर्तन बदनाम हो रहा है। मेरे सत्कर्मों का अगर कुछ फल बनता है तो मेरा किरीट मुझे वापस लौटा दो। ऐसा बोलते-बोलते सुजाता बेहोश हो गई लेकिन किरीट को अब कहां आना था।

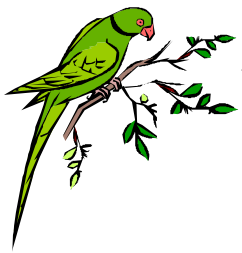

हिन्दुस्तान को ढूंढे

-संदीप सृजन

जमाना बेईमानो का चलो ईमान को ढूंढे।
सुनाने दर्द जीवन का किसी इंसान को ढूंढे।।

किसे विश्वास से अपना कहे जो दर्द को समझे।
किसी पत्थर की मूरत में चलो भगवान को ढूंढे।।

सफेदी पोत कर बैठे जो बगुला भगत हैं उनके।
शराफत के नकाबों में छुपे शैतान को ढूंढे।।

हुकूमत से भी ज्यादा हो जिसे प्यारा वतन अपना।
चढ़ा दे भेंट में औलाद उस सुल्तान को ढूंढे।।

खड़ा है धर्म जोड़े हाथ गुनाहो की कचहरी में।
दिया है कृष्ण ने गीता में उस वरदान को ढूंढे।।

तमन्ना है हरेक दिल में प्रभु श्रीराम पाने की।
मिला दे राम से हमको उन्ही हनुमान को ढूंढे।।

सितारा था बुलन्दी पर करी दुनिया की उस्तादी।
'सृजन' खोया गुलामी मे उस हिन्दुस्तान को ढूंढे।।

अन्डा सेवन तो नुकसानदायक है ही

-राम निवास लखोटिया

पिछले वर्षों में कई टीवी में यह विज्ञापन देखने को मिला है कि ''सन्डे हो या मन्डे, रोज खाओ अन्डे''। यह विज्ञापन स्वास्थ्य की दृष्टि से कितना भ्रमात्मक है इस बारे में वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर आपके स्वास्थ्य की सुरक्षा हेतु आपका सही मार्गदर्शन प्रस्तुत लेख में किया गया है। यह निर्विवाद है कि हर व्यक्ति इस बात के लिए पूर्ण स्वतंत्र है कि वह क्या खाये और क्या न खाये। किन्तु अच्छे स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से या भयानक बीमारियों की रोकथाम के लिए कुछ खाद्य पदार्थों का सेवन हानिकारक हो तो आपको अपने स्वास्थ्य की रक्षा हेतु चाहिए कि आप विवेक पूर्वक ऐसा खाद्य पदार्थ न लें। आप निम्न तथ्यों से भलीभांति जान पायेंगे कि अन्डा जहां स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है वहां वह मांसाहार भी है। इसलिए इसका सेवन हर दृष्टि से आपके लिए उचित नहीं। तो आईये अन्डों के बारे में कुछ प्रमुख तथ्यों पर हम दृष्टिपात करें।

1. अण्डा सेवन अहिंसा एवं करूणा के विपरीत

यह बहुधा सुनने में आता है कि अनिशेचित अन्डे शाकाहारी है। लेकिन यदि यह मालूम हो जाए कि उनके उत्पादन की विधि कितनी कूरता से परिपूर्ण है और भारतीय मूल्यों जैसे, अहिंसा और करूणा के विपरीत है तो बहुत लोग अन्डा सेवन बन्द कर देंगे। अमेरिका के विश्व विख्यात लेखक जॉन राबिन्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'डाइट फॉर ए न्यू अमेरिका' में लिखा है कि अन्डों की फैक्ट्रियों में स्थापित किए हुए पिंजड़ों में इतनी अधिक मुर्गियां भर दी जाती है कि वे पंख भी नहीं फड़फड़ा सकतीं और तन को 24 घन्टे लोहे की सलाख पर बैठना पड़ता है तब एक विशेष मशीन से एक ही रात में लगभग 3,000 मुर्गियों की चोंच काट दी जाती है और गरम-गरम आग से तपते हुए लाल औजारों से मुर्गी के पंख भी काट दिए जाते हैं। आप समझ सकते है कि जल्दी से अन्डा उत्पन्न करने का तरीका कितना हिंसात्मक है।

2. अन्डों से कई बीमारियां

हाल ही में हुआ बर्ड फ्ल्यू और सालमनोला बीमारी ने समस्त विश्व में यह प्रमाणित कर दिया है कि मुर्गियों को होने वाली कई बिमारियों के कारण अन्डों से यह बीमारी उस मनुष्य में प्रवेश कर जाती है। अन्डा सेवन करने वाले व्यक्तियों को यह भी नहीं मालूल कि इसमें हानिकारक कोलेस्ट्राल की बहुत अधिक मात्रा होती है। अन्डों के सेवन से आंतो में सड़न और आंतों में टी.बी. आदि की आशंकाएं बढ जाती है। अन्डे की सफेद जर्दी से पैप्सीन इंजाईम के विरूद्ध प्रतिक्रिया होती है। कैथराइन निम्मो तथा डॉ. जे.एम.विलिंकज ने एक सम्मिलित रिपोर्ट में कहा है कि अन्डा हृदय रोग और लकवे, आदि के लिए जिम्मेदार है। यह बात 1985 के नोबुल पुरस्कार विजेता डॉ. ब्राउन और डॉ. गोल्डस्टीन ने कही है कि अन्डों में सबसे अधिक कोलेस्ट्रोल होता है जिससे उत्पन्न हृदयरोग के कारण बहुत अधिक मौते होती है। इंग्लैंड के डॉ. आर.ज. विलियम ने कहा है कि जो लोज आज अन्डा

खाकर स्वस्थ रहने की कल्पना कर रहे हैं वे कल लकवा, एग्जिमा, इनजाइना जैसे रोगों के शिकार होंगे। फिर अन्डे में फाईबर नहीं होता और कार्बोहाईड्रेट जो शरीर में स्फूर्ति देता है वह भी ''शून्य'' होता है।

3. अन्डों में पौष्टिकता एवं उर्जा की कमी

यह भ्रम बडी तेजी से फैलाया जा रहा है कि शाकाहारी खाद्यानों की तुलना में अन्डे में अधिक प्रोटीन है। लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन के निम्न तुलनात्मक चार्ट से यह ज्ञात होता है कि प्रोटीन, खनिज लवण, एवं कैलोरी आदि की दृष्टि से कौन सा आहार हमारे लिए उपयुक्त है।

खाद्य का नाम (प्रत्येक 100 ग्राम)	प्रोटीन	खनिज लवण	कार्बोहाईड्रेट्स	कैलोरी
शाकाहारी खाद्य				
मूंग	24.0	3.6	45.6	334
सोयाबीन	43.2	4.6	20.9	432
मूंगफली	31.5	2.3	19.3	549
स्प्रेट्रा दुग्ध पाउडर	38.3	6.8	51.0	357
मांसाहारी खाद्य				
अन्डा	13.3	1.9	शून्य	173

4. कोई भी अन्डा शाकाहारी नहीं होता

प्रचार मध्यमों के कारण कुछ वर्षों से शुद्ध शाकाहारी परिवार के नवयुवक अन्ड़ो का सेवन करने लगे हैं, क्योंकि अनिशेचित अन्डों को 'शाकाहारी' नामकरण देकर एक भ्रम जाल फैलाया गया है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि अनिशेचित अन्डे किसी भी प्रकार से शाकाहारी नहीं होते क्योंकि न तो वे पेड़ों पर उगते हैं और न किसी पौधे पर बल्कि व सब मुर्गी के पेट से उत्पन्न होते हैं। 1971 में मिशीगन यूनिवर्सिटी, अमेरिका के वैज्ञानिकों ने यह सिद्व कर दिया था कि संसार का कोई भी अन्डा निर्जीव नहीं है चाहे निशेचित हो या अनिशचित। अन्डे के उपरी भाग पर 15,000 सूक्ष्म छिद्र होते हैं जिनसे अनिशेचित अन्डे का जीवन श्वास लेता है।

5. होटलों के खाने में क्या सावधानी बरतें

इस बात का ध्यान रखा जाए कि 'रशियन सलाद' जिसमें अन्डे का पीला भाग मेयोनीज होता है, नहीं खांए बल्कि उसके स्थान पर क्रीम वाला सलाद ही खाएं। इसी प्रकार जन्मदिन आदि की पार्टी में ''एगलैस केक'' ही निर्मित करवायें और उसी का सेवन करें।

6. विश्व एवं भारत के सुप्रसिद्ध शाकाहारी व्यक्ति

अरस्तु, प्लेटो, सुकरात, लियोनार्दो दाविंची, पाइथेगोरस, शेक्सपीयर, वड्कसवर्थ, लियो टॉलस्टॉय, जॉर्ज बरनार्ड शॉ, न्यूटन, बैंजामिन फैंकलिन, डार्विन, चर्चिल, आइंस्टिन, आदि। भारत के हैं- राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, महावीर, तिरूवल्लुवर, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, नानक, तुलसीदास, कबीर, मीराबाई, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी, गामा पहलवान, सरदार पटेल, लाल बहादुर शास्त्री, अब्दुल कलाम, अमिताभ बच्चन आदि।

मासिक राशि भविष्यफल-जून 2009

डॉ.एन.पी मित्तल, पलवल

मेषः- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ फल दायक कहा जाएगा। कुछ अवरोध तो आऐंगे किन्तु ये जातक उन्हें पार करते हुए लाभ प्राप्त करेंगे। अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगायें। परिवार में सामन्जस्य तथा समाज में मान सम्मान बना रहेगा। अपने जीवनसाथी तथा संतान की ओर से कुछ चिन्ता कर सकती है। क्रोध पर काबू रखें।

वृषः- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय दृष्टि से यह माह शुभ फल दायक है। कुछ हानि के पश्चात लाभ की उम्मीद की जा सकती है। मित्रों से सहायता की कम ही उम्मीद रखें। विरोधी सिर उठायेंगे पर ये जातक अपने परिवार व जीवन साथी की मदद से स्थिति संभाल लेंगे। किसी अनजान व्यक्ति पर विश्वास न करें। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

मिथुनः- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से इस माह अवरोधों के चलते अल्पलाभ देने वाला है। विरोधी अपनी चाल चलेंगे, उस समय अपने विवेक से काम लें। परिवारिक समस्याओं का समाधान बड़ी सूझबूझ के साथ निकालना होगा। पीर्टी आदियों में सचेत रहें। फूड पांइजनिंग का खतरा है। कुछ नौकरी पेशा जातकों का स्थान परिवर्तन सम्भव है। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

कर्कः- कर्क राशि के जातको के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ फलदायक है। आर्थिक लाभ के अवसर मिलेंगे। किसी नई योजना के क्रियान्वयन की भी सम्भावना है। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में यश, मान, सम्मान की प्राप्ति होगी। छोटी-बड़ी यात्राऐं होंगी जिनके लाभप्रद रहने की आशा है। किसी अन्य के मामले में बे वजह टांग न अड़ाएं, नुकसान हो सकता है।

सिंहः- सिंह राशि के जातको के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से सामान्य उन्नति दायक है। अपनी ऊर्जा बनाए रखें, श्रमसाध्य लाभ होगा। परिवार में सामन्जस्य बिठाने में थोड़ी मुश्किल आयेगी। अपने जीवन साथी की राय को महत्व दें। छोटी यात्राएं होंगी जिनसे शुभफल की आशा की जा सकती है। कुछ नौकरी पेशा जातकों की प्रमोशन आदि हो सकती है। अपने तथा अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें।

कन्याः- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ फल दायक है। कार्यों की सफलता में अवरोध आयेंगे तथा शत्रु भी सिर उठाएंगे किन्तु ये जातक उनका मुकाबला करने में कामयाब होंगे। परिवार में सामन्जस्य बिठाना होगा। मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। स्वास्थ्य में कुछ गिरावट महसूस करेंगे। समाज में मान बना रहेगा।

तुलाः- तुला राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ फल दायक है। इन जातकों के यत्न सार्थक होंगे। किसी नवीन योजना का क्रियान्वयन भी हो सकता है। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। सोचे हुए काम बनाने का माह है। छोटी-बड़ी यात्राएं होगी जो सफल होंगी। किसी के मामले में वे वजह टांग न अड़ाए। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

वृश्चिकः- वृश्चिक राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते सामान्य लाभ देने वाला है। परिवार में सामन्जस्य बिठाने में मुश्किलें आयेंगी। ठंडे दिमाग से काम लेंगे तो हल सम्भव है। नौकरी पेशा जातकों के लिये भी यह माह अच्छा है। नरम रवैये से अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। वाहन सावधानी से चलाएं। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

धनुः- धनु राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कड़ी मेहनत करने का है। श्रमसाध्य लाभ मिलेगा। बेकार के वाद-विवाद से बचें। किसी पर भी अधि ाक भरोसा करने की गलती न करें। परिवार में सामन्जस्य बिठाने में कामयाब होंगे। अपने बुजुर्गों की सलाह मानें। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। समाज में मान-प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

मकरः- मकर राशि के जातकों के लिए व्यवसाय-व्यापार की दृष्टि से यह माह शुभफल दायक नहीं कहा जायेगा। व्यर्थ की तकरार काम बिगाड़ सकती है। परिवारीजन भी सन्तुष्ट नहीं दिखेंगे। बुजुर्गों की राय मानेंगे तो हल निकल आयेगा। सन्तान की ओर से किसी चिन्ता का समाधान निकल आयेगा। कुछ जातकों की विदेश यात्रा भी हो सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कुम्भः- कुम्भ राशि के जातक व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह अवरोधों के चलते आंशिक लाभ देने वाला है। हर कार्य को सोच समझकर करें। आवेश में आकर कोई काम न करें। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में मान सम्मान बना रहेगा। कुछ जातकों के जमीनजायदाद के मामलों में झगड़े की नौबत आ सकती है, बुजुर्गों की तथा जीवन साथी की राय लें। सेहत का ध्यान रखें।

मीनः- मीन राशि के जातकों के लिए यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभप्रभ ही कहा जायेगा। परिवारी जनों में सामन्जस्य बना रहेगा। मित्र सहयोग करेंगे। सन्तान सम्बन्ध ाी कोई चिन्ता दूर होगी। कुछ जातकों को जमीन जायदाद का भी लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य सामन्यतथ अच्छा रहेगा। समाज में मान-प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

-इति शुभम्

दिल्ली समाचार

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी महाराज अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ जैन आश्रम, मानव मंदिर केन्द्र दिल्ली में सानन्द बिराजमान हैं। पूज्य गुरूदेव का तो यात्राओं पर आना-जाना लगा रहता है। किन्तु पूज्या साध्वीश्री के बिराजने से न केवल आश्रम की गतिविधियां सुचारू रूप से चलती रहती है, पूरा दिल्ली-समाज आपसे आध्यात्मिक संवल प्राप्त करता रहता है। पूज्य गुरूदेव अपने देश-विदेश की यात्राओं में फरमाते भी हैं कि पूज्या साध्वी श्री जी के दिल्ली प्रवास से मैं आश्रम की प्रवृत्तियों से निश्चिंत रहता हूं।

पूज्यवर की महावीर-जयंती धर्मशाला, हिमाचल में अक्षय-तृतीया सुनाम, पंजाब में

पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी की हिमाचल-यात्रा में प्रमुख निमित्त India Spender संस्थान द्वारा The Indian View for Global Peace विषय पर आयोजित कान्फ्रेंस थी इसकी जानकारी पाठकों को रूपरेखा पत्रिका के मई अंक सक मिल चुकी है। यह एक सुखद संयोग ही था कि जिस कांन्फ्रेंस में विभिन्न धर्मों की विश्व-विख्यात आध्यात्मिक विभूतियां- पूज्य श्री दलाई लामा जी, पूज्य श्री शंकराचार्य जी, पूज्य श्री करमापा जी, पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती 'मुनि जी', पूज्य स्वामी परमात्मानन्द जी तथा पूज्य आचार्य श्री रूपचन्द्र जी ने विश्व शांति के लिए एक मात्र मार्ग अहिंसा और करूणा पर एक स्वर से बल दिया था, वह कान्फ्रेंस भगवान महावीर की जन्म-जयन्ती पर ही आयोजित थी। और उसमें दिया गया सर्व-सम्मत संदेश भगवान महावीर के अहिंसा और अनेकांत का ही असांदिग्ध समर्थन था। हम समझ सकते हैं भगवान महावीर के प्रति उससे बड़ी विनयांजलि/भावांजलि और क्या हो सकती है।

धर्मशाला-मक्लाडगंज के पंच-दिवसीय प्रवास के पश्चात् पूज्यवर अप्रेल को चंडीगढ़ पधारे। यहां पर पूज्यवर का प्रवास भक्ति-परायण श्रीमती दर्शनाजी अग्रवाल के आवास पर रहा। पंचकूला में सेवाभावी श्री सीताराम बंसल के मकान पर पूज्यवर बिराजे। पूज्य गुरूदेव के भजन-प्रवचन के कार्यक्रमों में सर्वत्र भक्त-जन भाव-विभोर होकर आनन्त लेते हैं। जीरकपुर में यशस्वी कवि-कथाकार तथा समालोचफ प्रो. मानव के आवास पर साहित्य संगम

संस्था की संयोजना में सहित्य-संगोष्ठी रखी गई। पूज्य आचार्यश्री के सम्मान में आयोजित इस संगोष्ठी में चंडीगढ़ के अनेक बरिष्ठ साहित्यकारों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। जिसमें प्रमुख थे डॉ. राधेश्याम शर्मा, श्री विजय सहगल, डॉ. जगमोहन चोपड़ा, प्रो. मानव, प्रो. योगेश्वर कौर, डॉ. शशिप्रभा, डॉ. धर्मस्वरूप गुप्त, डॉ. ज्ञानचन्द्र शर्मा, श्री नवीन नीर आदि। उल्लेखनीय है चंडीगढ़-पंचकूला के साहित्यकार-समाज के मन में पूज्यवर की साहित्यिक कृतियों के प्रति गहरा लगाव है। प्रो. मानव इस साहित्यिक वर्ग के साथ संपर्क-सूत्र के लिए सशक्त माध्यम हैं। पूज्यवर की चंडीगढ-चात्रा में हर बार प्रो. मानव साहित्यिक हलचल के लिए सक्रिय भूमिका निभाते हैं। पूज्यवर के साथ उनका अनन्य प्रेम स्वयं साक्षी है। अस्वस्थता के बाबजूद श्रीमती योगेश्वर मानव का अतिथि-सत्कार सराहनीय रहा। प्रो. मानव के प्रयास भेंट-वार्ता प्रकाशित की। ERA Channel ने पूज्यवर के साहित्य-सृजन पर आधे घंटे का विशेष प्रसारण दिया।

पूज्यवर की पंजाब यात्रा के बीच मोगा शहर में श्री हरवंशलाल जी मित्तल तथा श्री राजकुमार जी मित्तल के आवास पर भजन-सत्संग के कार्यक्रम रहे। ये परिवार बड़ी श्रद्धा और प्रेम से पूज्यवर के साथ जुडे हैं। समयाभाव के कारण इस यात्रा में लुधियाना प्रवास संभव नहीं हो पाया। तीन दिन का मंडी गोविन्दगढ प्रवास लाला श्री महेन्द्रसिंह जी की नव-निर्मित कोठी में रहा। लालाजी का संपर्क उनके सुपुत्र श्री अशोकजी के स्वास्थ्य-लाभ के निमित्त से जैन आश्रम, नई दिल्ली, सेवा-धाम हॉस्पिटल में चिकित्सा-वश हुआ। तब से ही यह परिवार पूरी श्रद्धा और प्रेम से पूज्यवर से जुड़ गया है। काफी बडा भरा पूरा परिवार है। पूरे परिवार में जो एकता और प्रेम है वह प्रशंसनीय है। तीन-दिवसीय रात्रि-प्रवचन में सबने पूरा लाभ लिया। लालाजी ने पूज्य गुरूदेव से विनती करते हुए कहा- पंजाब जब भी पधारना हो, गोविन्दगढ़ आप जरूर पधारें। यह काठी आपकी ही है। साथ में जितनी भी संगत होगी, काठी सबके लिए खुली रहेगी। मंडी गोविन्दगढ में दिल्ली से साध्वी समताश्री जी तथा साध्वी वसुमती का भी आना हो गया। मंडी में एक सत्संग-कार्यक्रम मानव मंदिर के पुराने कार्यक्रर्ता श्री विमल कक्कडिया के आवास पर भी रहा, जिसमें मुहल्ले की बहनों ने अच्छी संस्था में भाग लिया। मालेर कोटला के श्रद्धाशील परिवार श्री ज्ञानचन्द्र जी की पुत्री श्रीमती अच्छी देवी के मकान पर भी भजन-सत्संग रहा। इस प्रकार मंडी गोविन्दगढ का तीन-दिवसीय प्रवास पूरा व्यस्त रहा।

सुनाम शहर में दश-दिवसीय प्रवास

पंजाब में मानव मंदिर मिशन का प्रमुख केन्द्र सुनाम शहर है। 19 अप्रेल को पूज्य गुरूदेव मंडी गोविन्दगढ से भवानीगढ होते हुए सुनाम पधारे। भवानीगढ में श्री प्रणीत सिंगला के शोरूम पर श्रद्धालु भाई-बहनों ने पूज्यवर की अगुवानी की। भवानीगढ़ समाज पूरी श्रद्धा प्रेम से मिशन से जुड़ा हुआ है। करीब घंटा भर के भजन-प्रवचन का लोगों ने भरपूर आनंद लिया।

सायं चार बजे मानव मंदिर सुनाम में पूज्य आचार्यश्री के सम्मान में सुनाम नगरपालिका के प्रधान श्री गोयलजी ने स्वागत भाषण किया। सरलमना साध्वीश्री, मंजुश्री जी, साध्वी चांदकुमारी जी तथा साध्वी दीपांजी जो कि हिसार से सीधे सुनाम पधार गई थीं। उनकी प्रसन्नता और उल्लास जैसे चेहरों से टपक रहा था। दिल्ली से साध्वी कनकलता जी तथा साध्वी पदमश्री जी के आगमन से उनका उत्साह द्विगणित हो गया मानव मंदिर सुनाम के प्रधान श्री सोहनलाल जी जैन, संरक्षक श्रीमती स्वराज बहिन जी, डॉ. राजेन्द्र जी जैन आदि ने भी पूज्यवर के सम्मान में अपने उद्‌गार रखे। साध्वी चांदकुमारीजी सुनाम समाज की ओर से अधिक-से-अधिक समय देने की विनती की। इस प्रसंग पर पूज्य अचार्यश्री ने कहा- हम आपको किसी व्यक्ति-विशेष, पंथ-विशेष अथवा मान्यता-विशेष से जोड़ने नहीं आये हैं। इससे आगे कहूं तो किसी अवतार, तीर्थकर अथवा भगवान-विशेष से भी जोडने नहीं आए हैं। हम आपको सिर्फ अपने से जोड़ने के लिए आए हैं। आप अपने स्वयं से जुडत्र अथवा मान्यता से जुड़ जाएंगे, अपने से जुड़ जाएं सत्य से जुड़ जाएंगे। किसी पंथ अथवा मान्यता से जुड़ने पर आप असी से जुड़ेगे, सत्य से नहीं। किसी व्यक्ति अथवा भगवान विशेष से जुड़ने पर दूसरों से ही जुड़गे, अपने से नहीं। अपने से नहीं जुडने पर अपने भीतर विराजमान परमात्मा कैसे प्रकट होगा। अब तक आप धर्म के नाम पर दूसरों से जुड़ते रहे हैं। मेरा निवेदन है अव आत अपने से जुड़ने का अनुभव लें। प्रभु का अशीर्वाद आप तक चलकर स्वयं आएगा।

सुनाम का दश-दिवशीय प्रवास बड़ी संभावना और प्रभावना का रहा। आसपास के क्षेत्रों से भी भक्त-प्रेमी जनों का आवागमन बराबर रहा। मंडी अहमदगढ से लाला नरात्तारामजी का परिवार, श्री गण्पतजी का परिवार, श्री चमनलालजी कमलेश अग्रवाल श्री

सुरेन्द्रजी कमलेश, धुरी से श्री बुधराम कक्कडिया का परिवार, लाला राममूर्तिजी, श्री चन्द्रमोहन, संगरूर से श्री दर्शनकुमार जी, भवानीगढ से मास्टर राजेन्द्र जी, लाला उग्रसेनजी आदि ने दर्शन लाभ लिया। संगरूर में लाला वीरबल दास जी के आवास पर भजनों का कार्यक्रम रहा।

पूज्यवर की चंडीगढ, पंजाब तथा पंचकूला-यात्रा में पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी के लिए विशेष प्रार्थना रही कि स्वास्थ्य की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए आपको एक बार सभी क्षेत्रों में पधारना चाहिए। आपके भजन-प्रवचनों से मिली प्रेरणा आज भी लोगों के दिलों में तरो-ताजा है।

सुनाम-प्रवास को सफल बनाने में श्री बाबूराज जी जैन परिवार, बहिन स्वराजजी, श्री पुरूषोत्तम बाबा, श्री चन्द्रप्रकाश जी, श्री अशोक जी, श्री स्वर्णेश जी, श्री रमेश जी गुजरांवाला, श्री रमेश जी जखेपल वाले, जीवनकुमार आदि की विशेष सेवाएं रही। मानव मंदिर कामिटी ने निकट भविष्य में हार्ट-चेक-अप कैम्प रखने का भी निर्णय लिया। अक्षय तृतीया के उपलक्ष्य में भगवान ऋषभदेव के महिमापूर्ण जीवन पर पूज्यवर का विशेष प्रवचन हुआ। इन सभी प्रवचनों में श्री सौरभ मुनि के सुमधुर भजनों का आनंद भी लोगों ने खूब लिया। प्रवचनों के साथ-साथ ध्यान का अभ्यास भी रहा। इस प्रकार करीब सताईस दिवसीय यात्रा के पश्चात् 29 अप्रेल को पून्यवर जैन आश्रम, मानव मंदिर, नई दिल्ली पधारे गए। सरलमना साध्वी श्री, मंजुश्री जी महाराज अपनी सहयोगी साध्वियां साध्वी चांदकुमारीजी, साध्वी दीपां जी तथा साध्वी पदमश्री जी के साथ अभी मानव मंदिर सुनाम में कुछ दिन और बिराजकर चातुर्मास के लिए दिल्ली जैन आश्रम पधार जाएंगी।